विषयसूची।

क्रम	विषय	पृष्ठ
१	धर्मकी सार्वभौमिकता	१
२	धर्मका स्वरूप	२
३	जैनधर्म	३
४	जैनधर्म सार्वधर्म है	५
५	जैनधर्म पतितोद्धारक भी है	७
६	धर्म जातिगत उच्चता नीचता नहीं देखता ...	१०
७	श्वेताम्बरीय मान्यता	१८
८	चारित्रभ्रष्टका उद्धार संभव है..	२०
९	प्रायश्चित्त ग्रंथोंका विधान	२३
१०	शूद्रादि भी धर्मपालन कर सकते हैं	२५
११	गोत्रकर्मका संक्रमण होता है	२९
१२	स्व० पं० गोपालदासजीका अभिमत	३०
१३	भारतीय साहित्यमें पतितोद्धारक जैनधर्म	३१
१४	पतितोद्धारक बतानेवाले ऐतिहासिक प्रमाण....	३३
१५	उपसंहार	३६

× × ×

(१६) चाण्डाल धर्मात्मा ।

१–यमपाल चाण्डाल ३९
२–अमर शहीद चाण्डाल चण्ड ४९
३–जन्मांध चाण्डाली दुर्गंधा ५९
४–चाण्डाल साधु हरिकेश ६६

(१७) शूद्र जातीय धर्मात्मा ।

१–सुनार और साधु मेतार्य ७९
२–मुनि भगदत्त ८५
३–माली सोमदत्त और अंजनचोर ... ९०
४–धर्मात्मा शूद्रा कन्यायें ९८

(१८) व्यभिचारजात धर्मात्मा।

१–मुनि कार्तिकेय १०९
२–महात्मा कर्ण १२५

(१९) पापपङ्कसे निकलकर धर्मकी गोदमें ।

१–चिलाती पुत्र १३७
२–ऋषि शैलक १४३
३–राजर्षि मधु १५१

४—श्री गुप्त १६०
५—चिलातीकुमार १६८

(२०) प्रकृतिके अंचलसे ।

१—उपाली १७७
२—वेमना १८४
३—चामेक वेश्या १९१
४—रैदास १९४
५—कबीर १९८